First Timothy: The Household of God

The Church at War

Dr. David Platt

October 23, 2011

युद्धरत् कलीसिया

1 तीमुथियुस 6:11–21

यदि आपके पास बाइबल हो, और मैं आशा करता हूँ कि होगी, तो जबकि हम पौलुस द्वारा तीमुथियुस को लिखे पहले पत्र की यात्रा के अंत की तैयारी कर रहे हैं, मैं चाहूँगा कि आप मेरे साथ 1 तीमुथियुस 6 निकालें। हम पौलुस को झूठे शिक्षकों, प्रार्थना के महत्व, कलीसिया के अगुवों के निमित्त निर्देश, विधवाओं और पुरनियों के निमित्त निर्देश, सेवकों और स्वामियों के निमित्त निर्देशों के मुद्दे को संबोधित करते देख चुके हैं। वह हमें भौतिकवाद के खतरों के प्रति सचेत कर चुका है। इसके बाद, इस पत्र के अंत में पहुँचते–पहुँचते आप सोचने लगते हैं, ''अपनी बात को चरम पर लाते समय, उससे निष्कर्ष निकालते समय, वह कौन सी बात है जो पौलुस तीमुथियुस को बताना चाहता है...उसके और कलीसिया के पास छोड़ना चाहता है? तो इन सब बातों में, कौन सी बात सबसे महत्वपूर्ण है?'' ये रहे उसके लिखे वे शब्द। 1 तीमुथियुस 6:11

> *''पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर। विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़, और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था। मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता है, और मसीह यीशु को गवाह कर के जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के साम्हने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूँ, कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख। जिसे वह ठीक समयों में दिखाएगा, जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है, उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।*

इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। और आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें। हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास से भटक गए हैं। तुम पर अनुग्रह होता रहे।''

वैश्विक सच्चाई को पहचानें

हम आत्मिक युद्ध में हैं।

इस तरह, मेरे विचार से हमने जो अभी पढ़ा है उसमें एक प्रमुख कथन है जो कि पौलुस के तीमुथियुस को दिए अंतिम आदेश के संपूर्ण सार को व्यक्त करता है। यह कथन 12वें पद में है; आप चाहें तो इसे रेखांकित कर लें। *''विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़।''* इसी भाषा का प्रयोग पौलुस ने पहले अध्याय का अंत करते समय किया था, जब वह कहता है कि *''...अच्छी लड़ाई को लड़ता रह; और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह... ।''* इस तरह, ऐसा लगता है कि मानो वह पुस्तकों का अंत कर रहा है। पहले अध्याय कें अंत में, और फिर छठवें अध्याय के अंत में वह तीमुथियुस को कह रहा है, कि ''तीमुथियुस, तुम युद्ध में हो। तुम ऐसी लड़ाई में हो जिसमें सचेत रहने की आवश्यकता है, ताकि तुम अपने विश्वास को थामे रह सको।'' मैं चाहता हूँ, कि आज की सुबह हम सबको भी इसी बात का अहसास हो। मैं चाहता हूँ कि हम सब इस विश्वव्यापी सच्चाई को जानें : आप एक आत्मिक युद्ध में लगे हैं। <u>हम सब, एक साथ, एक आत्मिक युद्ध में शामिल हैं,</u> और इसमें विश्व का हरेक जन शामिल है। इस बात पर बाइबल पूरी तरह स्पष्ट है : <u>हम युद्ध के समय में हैं, शांति के समय में नहीं।</u>

वचन में हर जगह यही बात लिखी है। हमारे पास हरेक पद को पढ़ने का समय नहीं हैं, लेकिन ज़रा देखें कि इब्रानियों 12:4 कहता है, *''तुमने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो।''* 1 पतरस 2:11 कहता है, *''जो आत्मा से युद्ध करती हैं।''* यहूदा 3 हमारे विश्वास के संघर्ष की बात कहता है। इसकी अगली ही पुस्तक में, जिसमें पौलुस तीमुथियुस को पत्र लिखता है, पौलुस कहता है, ''हम सिपाही हैं।'' कुरिन्थियों को लिखे दूसरे पत्र में पौलुस बताता है कि एक मसीही होने के नाते हमारे पास लड़ने के हथियार हैं। इफिसियों 6:12 में पौलुस सबसे स्पष्ट रुप से कहता है, *'' क्योंकि हमारा यह*

मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।'' सच्चाई यह है कि इस कमरे में बैठा हरेक व्यक्ति एक आत्मिक युद्ध में है। यह बात समझ लें। इसे जान लें। इस बात का अहसास करें।

हम सभी के जीवनों में इसकी अभिव्यक्ति अलग तरह से होती है, लेकिन हम सभी के जीवनों में ऐसी बातें हैं जो हमारे विश्वास पर हमला कर रही हैं। आपमें से कुछ लोग अपनी शादी को लेकर युद्ध में हैं। आप में से कुछ लोग एक माता–पिता के रुप में, अपने बच्चों को लेकर युद्ध में हैं। पवित्रता को लेकर इस कमरे में मौजूद हर दिमाग और जीवन में एक निरन्तर लड़ाई चल रही है। भाइयों, आपमें से कुछेक लोगों का दिमाग कामुक विचारों की युद्धभूमि बना हुआ है, और वहाँ पर युद्ध लड़ा जा रहा है। अविवाहितों, आप में से कुछ लोग गंभीर संबंध में हैं, और हर दिन, हर सप्ताह, आप पवित्रता और निर्मलता को लेकर युद्ध करते हैं। मेरे शादीशुदा भाइयों और मेरी बहनों, आपमें से कुछेक लोग उस अवैध प्रेम संबंध के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं जिसकी ओर आप धीरे–धीरे बढ़ रहे हैं। इस संदेश को सुन रहे लोगों में चिंता और संदेह और निराशा का युद्ध चल रहा है। हो सकता है कि आपमें से कुछ लोग इन सभी बातों, या उन बातों से भी जूझ रहे हों जिनका उल्लेख हमने यहाँ पर नहीं किया है। भौतिकवाद के लिए चारो ओर युद्ध लड़ा जा रहा है, और यह बात आपकी आत्मा को कचोट रही है।

सच्चाई यह है कि : हम एक आत्मिक युद्ध में हैं। चाहे आप घर में हैं, चाहे आप दफतर में हैं, चाहे आप अपने परिसर में हैं, चाहे आप अकेले हैं, चाहे आप किसी के साथ हैं, एक आत्मिक युद्ध चलता रहता है। हो सकता है आप सोचें कि ''खैर, मैं तो एक मसीही भी नहीं हूँ। तो यह बात मुझ पर लागू नहीं होती।'' बिल्कुल होती है। इस समय, आपकी आत्मा के लिए एक आत्मिक युद्ध चल रहा है।

आत्मिक युद्ध में हमारा विरोधी बहुत विकट है।

हम एक आत्मिक युद्ध में हैं, और इस आत्मिक युद्ध में हमारा विरोधी बहुत विकट है। स्वर्गीक क्षेत्र में दुष्टों की आत्मिक सैनाएँ, जो परमेश्वर की महिमा को मलीन करने, परमेश्वर के सुसमाचार को भ्रष्ट करने और परमेश्वर लोगों का नाश करने की इच्छा रखती हैं। एक विरोधी है, जो आपकी शादी को तबाह करना चाहता है। एक विरोधी है, जो आपके संबंधों का नाश करना चाहता है; एक विरोधी है जो आपकी पवित्रता को खत्म करना चाहता है और हर कीमत पर आपकी निष्ठा पर हमला करना चाहता है, ताकि परमेश्वर की भलाई और महिमा को न जान सकें और परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार न कर सकें। 1 पतरस 5:8 कहता है, *''तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़*

खाए।'' वह आपका शत्रु है, वह परमेश्वर नहीं है, तो भी आप स्वयं को कितना ही बलशाली और चालाक समझें, लेकिन अकेले तो आप उसके आगे कहीं नहीं ठहरते।

इस आत्मिक युद्ध का दायरा सर्वव्यापक है। इस आत्मिक युद्ध से बचना असंभव है।

इस आत्मिक युद्ध का दायरा सर्वव्यापक है; इसका दायरा ब्रह्माण्ड तक फैला है। इसमें हर भाषा, हर व्यक्ति, हर राष्ट्र, हर जाति, हर परिवार और हरेक जीवन शामिल है, जिसका अर्थ हुआ कि इस आत्मिक युद्ध से बचना असंभव है। आपके पास इस आत्मिक युद्ध में शामिल होने या न होने का विकल्प नहीं है। बाइबल ऐसा नहीं कहती कि ''शैतान की अनदेखी करो, और वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' यदि आप इस युद्ध से बचने का प्रयास करेंगे, और ऐसा अभिनय करेंगे कि मानो कोई युद्ध या संघर्ष ही न हो, तो आप इसमें टिक नहीं पाएंगे; आप लडखड़ाएंगे; आप डगमगाएंगे; और आप शत्रु द्वारा परास्त किए जाएंगे। आत्मिक भगौड़ापन, केवल आत्मिक पराजय लेकर आता है।

इस आत्मिक युद्ध में अनन्तता की बाज़ी लगी है।

यह खतरनाक है क्योंकि इस आत्मिक युद्ध में अनन्तता की बाज़ी लगी है। इसे सुनें : इस युद्ध में नुकसान केवल एक हाथ या पैर या आँख या फिर जीवन का नहीं होता; इस आत्मिक युद्ध में नुकसान का अर्थ होता है सब कुछ खो देना, यहाँ तक कि अपनी आत्मा भी; और फिर आत्माओं को अनन्त यातना के लिए नरक में फेंक दिया जाता है। मैं इसे अधिक नाटकीय नहीं बनाना चाहता हूँ, लेकिन यही सच्चाई है। ज़रा इस पर विचार करें। इस संसार का एक परमेश्वर है जिसकी इच्छा है कि हर व्यक्ति बचाया जाये। फिर इस संसार का भी एक परमेश्वर है, जो चाहता है कि हरेक व्यक्ति नरक की आग में जले। यह ब्रह्माण्डीय युद्ध है, और आप व मैं, ठीक इसके बीचो–बीच हैं। हम में से हरेक के जीवन पर अनन्तता तक, और दूसरों के जीवन पर अनन्तता तक इस बात के परिणाम होंगे कि हम इस युद्ध को कैसे लड़ते हैं, और कैसे इस संग्राम का सामना करते हैं।

अच्छी लड़ाई लड़ो

इसलिए, इसे महसूस करो। पौलुस कहता है, ''तीमुथियुस, एक अच्छी लड़ाई लड़।'' अब, आप सोचते हैं, ''क्या अच्छी लड़ाई भी कोई चीज़ होती है?'' ''हाँ,'' पौलुस कहता है कि होती है। अच्छी लड़ाई नाम की चीज़ होती है। जब आप अनन्त जीवन के लिए लड़ते हैं, जब आप आनन्द और शांति के लिए लड़ते हैं, जब आप हियाव और आशा के लिए लड़ते हैं, तो आप एक अच्छी लड़ाई लड़ते हैं, और लेकिन ऐसा आप केवल अपने लिए नहीं करते, वरन् दूसरों के लिए करते हैं। जब आप जीवित रहने और सुसमाचार के प्रचार

के लिए लड़ते हैं, ताकि दूसरे भी उस अनन्त यातना से बचकर अनन्त जीवन को पायें, तो आप एक अच्छी लड़ाई लड़ते हैं। यह एक अच्छी लड़ाई है।

मैं अपने जीवन में बीती कल की सुबह के बारे में सोच रहा हूँ। मैं अपने विश्वास के परिवार के दो भाइयों के बारे में सोच रहा हूँ, और काफी समय से वे मुझे कसरत के लिए जिम (व्यायामशाला) ले जाने का प्रयास कर रहे थे। कल ''मित्र दिवस'' था, इसलिए उन्होंने मुझे इसे मनाने के लिए आमंत्रित किया। देखिये, यह ''मित्र दिवस'' के नाम से मेरे मन में बहुत सुहाने विचार आते हैं। मुझे दोस्तों के मुस्कुराते चेहरे, हँसी–मज़ाक और मौज करने के विचार आते हैं। ''मित्र दिवस'' बहुत अच्छा दिन होता है।

लेकिन यह ''मित्र दिवस'' ऐसा नहीं था। मैं कल सुबह उनसे मिलने गया, हमें बताया कि हम लोग दोस्तों की तरह, 12 मिनट की कसरत साथ में करेंगे। ''बारह मिनट,'' शायद। ''बस बारह मिनट होते कितने हैं?'' तो पहले हम शरीर को गरमाने के लिए हल्की–फुल्की कसरत करते हैं। मैं आपको बताना चाहूँगा कि इस कसरत के खत्म होते–होते मैं बुरी तरह थक कर चूर हो गया था; और फिर शुरु हुए मेरे जीवन के सबसे लंबे 12 मिनट! हमने दौड़ लगाई, गेंद उछालने वाली कसरत की, उकड़ू हुए और हाथों की कसरत की। बारह मिनट बाद, मैं ज़मीन पर पड़ा हुआ था, और मेरे पैर फटने की कगार पर थे। मैं वहाँ पड़ा हुआ था, और आसपास से गुज़रते हुए लोग पूछ रहे थे, ''इसकी हालत सही है क्या?'' ''नहीं!'' मैने मन में सोचा ''नहीं, मेरी हालत बिल्कुल भी सही नहीं है! मेरी हालत बहुत खस्ता है!'' इस सुबह भी मेरी हालत खस्ता ही है। मैं अपने हाथों को कंधे से ऊपर नहीं उठा सकता। यहाँ बैठ–बैठे अच्छा लग रहा है, लेकिन डरता हूँ कि अभी कुछ मिनटों में जब मुझे उठ कर खड़े होना पड़ेगा, तब मेरा क्या होगा।

ब्रूक हिल्स के कुछ लोग ये सब देख रहे थे, और जब मैं वहाँ बिल्कुल बेहाल हो कर पड़ा हुआ था, तब एक बच्चे ने जुर्रत करके मेरी तरफ देखा और कहा, ''पास्टर डेविड, आप उपदेश तो अच्छा देते हैं, लेकिन दौड़ने में आप कुछ ख़ास नहीं हैं।''लेकिन हैरानी की बात है कि अब मैं उस अनुभव की ओर देखता हूँ तो सोचता हूँ वह अच्छा अनुभव था। वह लड़ाई आसान नहीं थी, लेकिन एक अच्छी लड़ाई थी, और मैं वापिस जाकर उस अच्छी लड़ाई को और लड़ूँगा।

इस तरह, ये रही वे बातें जो मैं चाहता हूँ कि हम करें : मैं चाहता हूँ कि इस समय आपके मन और जीवन में जो लड़ाई चल रही है आप उसके विषय में सोचें। इस तरह, हमस ब एक आत्मिक युद्ध में शामिल हैं; हम सभी के जीवनों में हम अलग–अलग लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं। हो सकता है कि आप इनमें से किसी मुद्दे पर लड़ाई लड़ रहे हैं। शायद यह आपके विवाह को लेकर है, या पालन–पोषण, अथवा संबंधों को लेकर; या फिर आपके विचारों, या भावनाओं को लेकर। तो, कहाँ है वह बिंदु? मैं चाहता हूँ कि आप अपने जीवन

के बारे में सोचें, जहाँ आप बैठे हैं, ठीक वहीं पर; आपके जीवन में वे कौन सा बिंदु अथवा कौने से बिंदु हैं जहाँ यह युद्ध की भीषणता सबसे अधिक है? मैं चाहता हूँ कि आप उसे अपने मन में सबसे आगे रखें, और मैं चाहता हूँ कि वचन वहाँ कार्य करे। मैं आपको सांत्वना देना चाहता हूँ। मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ। मैं आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूँ कि आप इस लड़ाई को अच्छे से लड़े।

पौलुस क्या करता है, कि वह *''अच्छी कुश्ती लड़''* को आदेशात्मक शब्दों के साथ कहता है, ताकि वह तीमुथियुस को यह बता सके कि उसे यह लड़ाई किस प्रकार लड़नी है। इसलिए, उनमें से पाँच बातों को मैंने आपके नोट्स में यहाँ सूचीबद्ध किया है, और मैं बस चाहता हूँ कि आपके जीवन में जो कुछ भी घट रहा है, उसे आप अपने मन में रखें और इन पदों को सीधा आपकी गोद में और उस आत्मिक युद्ध के बीचो–बीच आने दें जिनमें आप स्वयं को पाते हैं।

जो बातें जो आपको परमेश्वर से दूर ले जाती हैं, उनसे दूर भाग।

यह रही वह बात जो पौलुस सबसे पहले कहता है। 11वें पद में वह कहता है, *''..हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग.... /''* तो, आप अपने आसपास चल रहे इस आत्मिक युद्ध को कैसे लड़ते हैं? पहली बात : आप उन बातों से दूर भागें जो आपको परमेश्वर से दूर करती हैं। आप दूर भागने के द्वारा लड़ते हैं। अब, आप सोचते होंगे, ''इसे तो लड़ाई लड़ना नहीं कहते! यह तो लड़ाई से दूर भागना है।'' भाइयों और बहनों, कई बार भाग जाना ही जीवन के लिए लड़ने का सबसे बेहतरीन तरीका होता है। अगर रास्ते में सवा सौ किलों का कोई पहलवान मुझे मसलने की ताक में खड़ा है, तो ऐसे में उसके साथ हाथापाई करना बुद्धिमानी नहीं होगी। वहाँ से भाग जाना ही अपने जीवन को बचाने की सबसे सही रणनीति होगी। इसलिए, पौलुस कहता है, ''इन सब बातों से दूर भाग।'' ''इन बातों'' से उसका क्या तात्पर्य है? वह भौतिकवाद और झगड़ना और निदां करना और स्वार्थ के बारे में कह रहा है जिनके विषय में उसने छठवें अध्याय में इन पदों के ठीक पहले कहा था। वह कहता है, ''इन पापमय कामों से दूर भाग। पाप की हर परीक्षा से दूर भाग। भाग। पाप के साथ आँखमिचौनी न खेल; उससे दूर भाग।'' धोखा न खा। पाप हमेशा धीमें से आता है। पाप हमेंशा अचानक से आता है। बस एक झलक। बस एक विचार। बस एक चुंबन। बस एक और खरीद, बस एक मिनट। बस एक न जाने क्या–क्या। नहीं! भाग!

तो भी, इसे देखें। यह करने तक सीमित नहीं होता। पौलुस कहता है, ''पापमयी इच्छाओं से भाग।'' ''इन बातों से'' भाग। 9वें और 10वें पद में उसने जो कहा था, उस पर वापिस चलें। वह धनवान होने की इच्छा, पैसों के प्रेम, और परमेश्वर से दूर ले जानेवाली लालसाओं के बारे में कह रहा है। जब भी आपके मन में परमेश्वर से दूर ले जानेवाली लालसायें जागें, भागें! इसकी अनदेखी न करें; इसे एक स्तर और गहरा ले

जायें। यह बहुत बड़ी बात है। विश्वास की लड़ाई में, हम केवल पापमयी इच्छाओं और कामों से दूर नहीं भाग रहे हैं। आखिकार, हम पापमय विचारों से दूर भाग रहे हैं। ज़रा इस पर विचार करें। ''विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़,'' और विश्वास के केंद्र में भरोसा होता है।

बाइबल यहाँ कह रही है कि ''परमेश्वर पर विश्वास करने की लड़ाई लड़।'' यह बहुत बड़ी बात है! ज़रा इस पर विचार करें। छठवें अध्याय में भौतिकवाद के विषय में पौलुस के कहने के बावजूद, हम भौतिकवाद और चीज़ों के पीछे क्यों भागते हैं? पौलुस ने यह बात पूरी तरह साफ की है। पौलुस ने बताया कि भौतिकवाद और चीज़ों के पीछे हम इसलिए भागते हैं क्योंकि हमारा इस बात पर विश्वास नहीं है कि परमेश्वर लाभ है। हम इस बात पर विश्वास नहीं करते हैं कि हमारे लिए केवल परमेश्वर का होना काफी है, इसीलिए हम अपने जीवन में पहले से बड़ी और बेहतर चीज़ों से अधिकाधिक भरते जाते हैं, क्योंकि हमे लगता है कि इनसे संतुष्टि मिलेगी। यदि हम सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा कर लें, तो इन सब चीज़ों के पीछे भागने की ज़रुरत नहीं होगी।

इसलिए, भौतिकवाद का सामना परमेश्वर पर अपने विश्वास के साथ करो। यही वह स्थान है जहाँ हमें इस बात का अहसास होता है कि पाप के साथ हमारे संघर्ष के मूल में विश्वास करने का संघर्ष है। इस पर विचार करें। आप झूठ क्यों बोलते हैं? आप झूठ बोलते हैं क्योंकि आप ऐसा करने में विश्वास करते हैं, कि यह आपके लिए बेहतर होगा। आप झूठ बोलते हैं, क्योंकि आप उस परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते जो कहता है कि ''तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम सत्य बोलो।'' आप व्यभिचार में क्यों पड़ जाते हैं? आप व्यभिचार में इसलिए पड़ते हैं क्योंकि आपको इस बात का विश्वास नहीं है कि आपके लिए पवित्र रहना अच्छा और सबसे बेहतर है। आप सोचते हैं कि व्यभिचार में अधिक आनन्द है। इसलिए, आप परमेश्वर पर अपना विश्वास रखने के द्वारा इसके विरुद्ध लड़ते हैं। देखिये, परमेश्वर जानता है वह क्या कह रहा है।

आप चिंता या निराशा या संदेह के साथ होनेवाले संघर्षों के बारे में सोचें। ये सभी, परमेश्वर पर विश्वास करने के संघर्ष हैं। आपको चिंता तभी सताती है जब आपको लगता है कि परमेश्वर आपकी सहायता नहीं कर सकता। निराशा तब आती है जब आपको इस बात पर विश्वास करने में कठिनाई होती है कि परमेश्वर भला है। संदेह तब आता है, जब आपको यह विश्वास करने में कठिनाई होती है कि परमेश्वर सच्चा है। इसलिए, विश्वास की इस लड़ाई में, पापमय विचारों से दूर भागें। हर उस बात या चीज़ से दूर भागें जो परमेश्वर पर अविश्वास को जगाते हैं, यही बात साईड में लिखे नोट्स में लिखी है। यह साईड में लिखी टिप्पणी है जो हमें विश्वास की लड़ाई में वचन का प्रयोग करने के महत्व की याद दिलाती है; कि विश्वास की इस अच्छी लड़ाई में, वचन ही हमारा प्रमुख हथियार है।

जब आपको इस बात का विश्वास करने में कठिनाई हो कि परमेश्वर सचमुच आपके साथ है, और आप अकेलेपन से जूझ रहे हैं, आपको कोई दिखाई नहीं देता, तो आप इसका सामना कैसे करते हैं? आप यहोशू 1 और मत्ती 28 के साथ उसका सामना करते हैं। उसने कहा था, *''मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।''* मैं उस पर विश्वास करनेवाला हूँ। जब मुझे उसकी उपस्थिति महसूस न हो, तब भी मैं विश्वास करुँगा कि वह मेरे साथ है। विश्वास की लड़ाई को वचन के हथियार से लड़ें। आप अपने जीवन में जूझ रहे हैं। सारी चीज़ें बिखर रही हैं। आप सोचते हैं, ''क्या परमेश्वर सचमुच नियंत्रण में हैं? क्या उसे मेरी परवाह है? क्या इससे मदद मिलेगी? ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह मेरे लिए कोई रास्ता बनाएगा।'' इसका सामना आप कैसे करेंगे? आप उसका सामना भजनसंहिता 31:15 के साथ करेंगे, जो कहता है कि *''मेरे दिन तेरे हाथ में हैं।''* अययूब 42, ''तेरी युक्तियों में से कोई नहीं रुक सकतीं।'' रोमियों 8:28, *''और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुए हैं।''* आप विश्वास की लड़ाई को वचन के हथियार से लड़ते हैं। उसने कहा, ''मैं इस वचन पर विश्वास करुँगा।''

परमेश्वर की ओर ले जानेवाली भली बातों के पीछे जायें।

इसलिए, परमेश्वर से दूर ले जानेवाली बुरी बातों से दूर भागो। अब, आप केवल चीज़ों से दूर नहीं भागते हैं; आप कुछ चीज़ों की ओर भी भागते हैं। इसलिए, परमेश्वर से दूर करनेवाली बातों से दूर भागें, और परमेश्वर की ओर ले जानेवाली बातों के पीछे जायें। वह कहता है ''इस बातों से दूर भाग और.....का पीछा कर।'' वह हमें ऐसी छः बातों की सूची देता है जिसके पीछे हमें जाना हैं; और वे बातें हैं : धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता। इसलिए पीछा करें। इन चीज़ों का पीछा करें। धर्मी सोंच और जीवन–शैली का पीछा करें। उसके पीछे जायें। भक्तिपूर्ण विश्वास और भक्तिपूर्ण बर्ताव के पीछे जायें।

भक्ति, यह शब्द, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, 1 तीमुथियुस में पौलुस का मनपसंद शब्द है। परमेश्वर पर केंद्रित आस्था, परमेश्वर पर केंद्रित व्यवहार, एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर के इर्द–गिर्द चक्कर काटता है। अपनी बुद्धि, अपने मन, और अपने जीवन को सबसे पहले और सबसे अधिक, परमेश्वर से संतृप्त करें। अपने विश्वास की लड़ाई आप इसी तरह लड़ते हैं। स्वयं को भक्ति और धर्मिता से संतृप्त करें। इसके बाद, वह कहता है कि ''विश्वास का पीछा कर।'' परमेश्वर में गहरे विश्वास का पीछा करें। विश्वास की लड़ाई को लड़ने के लिए हम विश्वास के पीछे जाते हैं। अपने आसपास होते संघर्षों और युद्ध के बीच, विश्वास में उन्नति करें। यही वह स्थान है जहाँ हमें इस बात का अहसास होता है कि जीवन के सबसे विकट समय विश्वास को गहरा करते हैं।

मैंलकॉम मगरिज ने कहा था,

> हालांकि ऐसी आशा नहीं की जाती, लेकिन मैं अपने जीवन के अनुभवों को, विशेष रुप से विनाशकारी और दुखद प्रतीत होनेवाले समय को एक अलग सी संतुष्टि के साथ देखता हूँ। वास्तव में पूरी सच्चाई के साथ मैं यह कह सकता हूँ कि अपने 75 साल के जीवन में मैंने जो कुछ भी सीखा है, जिसने भी मेरे आस्तित्व को प्रबुद्ध और विकसित किया है, वह खुशियों के नहीं वरन् यातना के माध्यम से हुआ है, फिर चाहे मैं उसके पीछे गया था या वह मेरे पास आए थे।

यह रोमियों 5 हैं: *''केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।''* इसलिए, अपने संघर्षों के बीच, परमेश्वर और गहरा विश्वास माँगें। परमेश्वर पर गहरी आस्था के पीछे जायें। इसके बाद, परमेश्वर के लिए गहरे प्रेम का पीछा करें। विश्वास और प्रेम का पीछा करें। परमेश्वर के प्रति प्रेम का पीछा करें। अपने मनों का पोषण करें।

अभी कुछ सप्ताह पहले ही, मैं किसी चीज़ को लेकर जूझ रहा था, इसलिए मैं प्रभु के साथ अतिरिक्त और गहरा समय बिताता हूँ। मैं प्रार्थना करते हुए सचमुच किसी बात से जूझ रहा था, और उसी संघर्ष के समय परमेश्वर ने यूहन्ना 15:9 की ओर मेरी अगुवाई की। पूरे नये दृष्टिकोण के साथ, मैं उन शब्दों पर पहुँचता हूँ, जहाँ यीशु अपने चेलों से कहता है कि *''जिस प्रकार पिता ने मुझसे प्रेम रखा, वैसे ही मैंने भी तुमसे प्रेम रखा।''* वाह! ज़रा सोचिये तो; कि *''जिस प्रकार पिता ने मुझसे प्रेम रखा..... ।''* असीम प्रेम। पिता अपने पुत्र से अगाध प्रेम रखता है! इसके बाद, वह कहता है कि *''.....इसलिए मुझमें बने रहो।''* बिल्कुल सही बात है! मैं और कहाँ जाऊँ? बिल्कुल! आत्मिक रुप से विकट समय में भी, इसे सोख लें; कि जिस प्रकार पिता ने मसीह से प्रेम रखा, वैसे ही मसीह ने आपसे प्रेम रखा है!

इसलिए, उसके प्रेम में रहो! उसके प्रेम में बने रहो! आप देखते हैं कि कैसे ये बातें लड़ाई के बीच में होती हैं! मैं बस यूहन्ना 15:9 को लेकर वहाँ अपने घुटनों के बल बैठ गया; बस परमेश्वर के प्रेम से सिक्त मेरा मन, और परमेश्वर के लिए प्रेम से सिक्त मेरा मन।

विश्वास की लड़ाई लड़ें। प्रेम का पीछा तो कर, लेकिन केवल परमेश्वर के प्रति ही नहीं, वरन् दूसरों के प्रति भी प्रेम रख। विश्वास की लड़ाई लड़ें। अपने विश्वास से कहें कि वह आपके पति से प्रेम रखे, आपकी पत्नी से प्रेम रखे, आपके पड़ोसी से प्रेम रखे, आपके शत्रु से प्रेम रखे, और आपके सहकर्मी से प्रेम रखे।

परमेश्वर के लिए पहले से अधिक प्रेम। विकट परिस्थितियों में धीरज का पीछा करें। ''धीरज का पीछा कर,'' पौलुस कहता है। सहनशीलता और दृढ़ता का पीछा करें। लगातार कठिन होती अंतहीन लगनेवाली परिस्थितियों में भी, आगे बढ़ते रहने की सामर्थ्य का पीछा करें। हार न मानें। आपमें से कुछ लोग एक अरसे से अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं, और आपको उसमें जूझते रहने का प्रोत्साहन दूँगा। हार न मानें। मत्ती 24:13 कहता है, *''परन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसीका उद्धार होगा।''* इब्रानियों 3:14, *''क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।''* विकट परिस्थितियों के बीच, धीरज का पीछा करें।

अंत में, विकट लोगों के प्रति नम्रता बरतें। बहुत अजीब बात है। अच्छी लड़ाई को नम्रता के साथ लड़ें। आप नम्र हो कर कैसे लड़ सकते हैं? इसमें बहुत सामर्थ्य है, लेकिन यहाँ एक शांत सामर्थ्य है; यह एक विनम्र सामर्थ्य है। यह कठोर, मन दुखानेवाले स्वर में नहीं, वरन् एक नम्र, और दीन आचरण में दिखती है। यहाँ तक कि उन लोगों के प्रति भी, जो हो सकता है कि आपके जीवन में होनेवाली आत्मिक संघर्ष का कारण भी हों। यह एक अच्छी लड़ाई है। आप इन सब बातों को देखते हैं, और जानते हैं कि इनके लिए लड़ना एक अच्छी बात है। हर मसीही इन बातों की चाहत रखता है, लेकिन इन चीज़ों की सूची देखने पर पता चलता है कि इनमें से कोई भी बात हमारे लिए स्वाभाविक नहीं है।

मुझे पौलुस की अगली बात बहुत पसंद आती है कि हमें यह अहसास कराता है कि इन सभी बातों को मसीह में हमारे निमित्त मोल लिया जा चुका है। इसलिए, 12वें पद में पौलुस कहता है, कि *''विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़, और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।''*

जो जीवन आपको दिया गया है, उसका अनुभव करें।

पौलुस कहता है, इन बातों से दूर भाग, इन बातों का पीछा कर, और इसके बाद, इन सबके बीच, जो जीवन आपको दिया गया है, उसका अनुभव लें। कितना रोचक पद है। पौलुस तीमुथियुस को अनंत जीवन पकड़ने को कहता है, लेकिन तीमुथियुस को तो मसीह में अनंत जीवन तभी दे दिया गया था, जब मसीह ने उसके नाम को पुकारा था, और उसने बहुत से गवाहों के सामने अपने विश्वास का अंगीकार किया था।

तो भी, वास्तविकता दरअसल यह है। आप ज़रा इस पर विचार करें। अपने जीवन में, आप एक मसीही होने के नाते, मसीह के पीछे चलनेवाला व्यक्ति होने के नाते, आप मसीह में हैं। आपके भीतर उसका जीवन है, तो भी, अपने भीतर उसके जीवन की भरपूरी का अनुभव करने के लिए आपको हर दिन संघर्ष करना पड़ता

है। मैं और आप जानते हैं कि भविष्य में, एक दिन आएगा, जब हम पूरी तरह और संपूर्ण रीति से, पाप रहित उस जीवन को जीएंगे जिसे मसीह ने हमारे निमित्त मोल लिया है। एक दिन ऐसा भी आएगा जब संसार की सारी आत्मिक लड़ाइयाँ समाप्त हो जाएँगी, लेकिन उस दिन के आने तक, उस जीवन का अनुभव करना – जिसे हमारे लिए मसीह ने मोल लिया है – हमारे लिए एक दैनिक संघर्ष व युद्ध है। इसलिए, मैं हर मसीही से यह कहूँगा, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस से कहा था, अपने जीवन में आत्मिक युद्ध लड़ते समय, ये बाते याद रख। याद रखें कि उसने आपको नाम से बुलाया है। आप उससे जुड़े हैं। आप उसकी संतान हैं। इसे रेखांकित कर लें। आप परमेश्वर के विरुद्ध नहीं लड़ रहे हैं। परमेश्वर आपके लिए लड़ रहा है!

यह एक अच्छी खबर है। आप परमेश्वर के विरुद्ध नहीं लड़ रहे हैं; परमेश्वर आपके लिए लड़ रहा है! उसने आपका नाम पुकारा है। आपने अपने विश्वास का अंगीकार किया है। आपने उसका पक्ष लिया है। मैलोरी के समान, दिन के शुरुआती पहर में, वह खड़ी हुई और बपतिस्मा लिया, और गवाहों के सामने, आपने अंगीकार किया है। पौलुस कहता है, ''तुम पाप के लिए मर चुके हो, और मसीह में जीते हो। तुमने अपने विश्वास का अंगीकार किया है।''

इसलिए, इसके प्रकाश में, परमेश्वर की उपस्थिति में, परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योति में जीवन जीओ। पौलुस कहता है, *''मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता है.....यह आज्ञा देता हूँ.....* / ज़रा इस पर विचार करें, कि इस युद्ध को लड़ते समय, परमेश्वर, जो कि आपका जीवन है, आपके साथ है! आप अपना युद्ध सभी चीज़ों के सृष्टिकर्ता, सभी चीज़ों के संरक्षक, परमेश्वर में और परमेश्वर के साथ होकर लड़ते हैं। वही एक है जो आपके साथ है, और वह आपके पक्ष में है! मसीह का अंगीकार करने के कारण आप जानते हैं, कि वह आपके साथ है।

परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योति में जीएँ; मसीह की विश्वासयोग्यता की दृष्टि में जीएँ। जब परमेश्वर के पुत्र का जीवन पुन्तियुस पीलातुस के सामने प्रस्तुत था, तब यह जानते–बूझते हुए कि उसके सामने मौत खड़ी है, पौलुस कहता है, कि मसीह ने अच्छा अंगीकार किया। उसने आपकी ओर अपने राजत्व का अंगीकार किया, जिसके कारण उसे मृत्यु दंड मिला। यही वह उद्धारकर्ता है जिसने आपके लिए जान दी है! ज़रा इसे देखें! वह उद्धारकर्ता जो आपके लिए मारा गया था, आज आपके साथ युद्ध में खड़ा है! ओह! कितनी बढ़िया बात है! हमें किस बात का डर है? वह उद्धारकर्ता जो आपके लिए मारा गया था, वही वह राजा भी है जो जल्द ही आपको लेने आनेवाला है। हम अपने विश्वास की लड़ाई, अपने प्रभु यीशु मसीह की झलक देखने की इच्छा से, आकाश में नज़रे गढ़ाये हुए लड़ते हैं। हम बुरी बातों से दूर भागते हैं। हम

अच्छी बातों के पीछे जाते हैं। इस बात को जानते, विश्वास करते, और आशा करते हुए कि वह किसी भी समय वापिस आ सकता है, और किसी भी समय वापिस आनेवाला है। हम नहीं चाहते कि जिस पल वह लौटे, उस पल, हम उन बातों में उलझे हों जिनसे वह हमे पहले ही मुक्ति दे चुका है।

वह विश्वासियों के लिए वापिस आ रहा है, न कि विश्वासहीनों के लिए। चलिए लड़ाई लड़ें। इन सब उत्साहवर्धक बातों के बीच भी, हम संघर्ष करते हैं, और कमज़ोर महसूस करते हैं, और सोचते हैं कि हम आगे बढ़ भी पाएंगे या नहीं। पौलुस के शब्दों की मुझे यह बात बहुत अच्छी लगती है। वह कभी भी परमेश्वर की स्तुति करने लग जाता है। प्रोत्साहन बिल्कुल स्पष्ट हैः परमेश्वर की महानता के प्रति आदरपूर्ण भय रखते हुए जीवन जीएँ। *''.....जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है, उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।''*

मेरे भाई या बहन, क्या आप स्वयं को शक्तिहीन महसूस करते हैं? क्या आप शक्तिहीन महसूस करते हैं? यदि ऐसा है, तो अपने सिर को उठा कर उसे देखें, जो आपके साथ है, वह जो आपके पक्ष में है। वह अधिपति है। केवल वही अधिपति है। कैंसर अधिपति नहीं है। तलाक अधिपति नहीं है। समस्या अधिपति नहीं है। बैर अधिपति नहीं है। परीक्षा अधिपति नहीं है। निराशा अधिपति नहीं है। इस सब बातों पर केवल आपका परमेश्वर ही अधिपति है। वह उन सब पर राज्य करता है। उसका राज्य सर्वव्यापी है। उसका राज्य अजेय है। वह राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। कोई दूसरा राज्य लेषमात्र भी उसकी तुलना नहीं कर सकता है। वह अमर है। अमरता केवल परमेश्वर में है। ज़रा इस पर विचार करें। वह इतिहास से ऊपर है। वह समय से परे है। वह अविनाशी है। भजनसंहिता 90 कहती है, वह ''पीढ़ी से पीढ़ी'' तक है। वह अगम्य है, और अगम्य ज्योति में रहता है। ओह, कितनी महान तस्वीर है! परमेश्वर, चकाचौंध करनेवाली पवित्रता, और निर्मलता और महिमा के वातावरण में रहता है।

अगम्य और अचिंत्य, और *''न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है।''* वह सोचे गए हर विचार और विचारी गई हर कल्पना से विशाल है! हम सबके लिए सीमाओं से कहीं परे है! *''उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा।''* सारी शक्तियाँ उसी के पास हैं, और वही सारी स्तुति के योग्य है! यही वह परमेश्वर है जो आपका जीवन है।

जगत की कौन सी वस्तु आपसे वह जीवन छीन सकती है? कुछ भी नहीं। जब परमेश्वर आपके जीवन में है, तो कोई भी बात आपके आनन्द को नहीं चुरा सकती, और कुछ भी आपकी आशा नहीं छीन सकती।

इसलिए, उसे थामे रहें। उस जीवन को थामे रहें जो वह आपको देता है। उसे थाम रहें। उसे पकड़े रहें। उसका अनुभव करें। यह आपका है। वह आपका है।

ये बातें इसे लड़े जाने योग्य एक अच्छी लड़ाई बनाती है। इसका औचित्य समझ में आता है। मैं अकसर सोचता था, 1 तीमुथियुस 6:16 में ''आमीन'' शब्द के साथ पत्र का अंत करना सही रहता। इससे पत्र को एक प्रभावशाली समापन मिलता। मैं अकसर सोचता था, कि ''पौलुस न जाने क्यों फिर से भौतिकवाद, और धन के प्रयोग के मुद्दे पर लौटता है?'' लेकिन, सोचने पर बात समझ में आने लगती है, और आपको अहसास होता है, कि पौलुस वास्तव में, बस उन्हीं बातों को दोहरा रहा है जो उसने 1 तीमुथियुस 6:6 में कही थीं, कि ''पर संतोषसहित भक्ति बड़ी कमाई है।'' परमेश्वर में, आपको लाभ है!

भौतिक खज़ाने को दे दो।

इसलिए, आप भौतिक खज़ानों को दे कर अपने विश्वास की लड़ाई लड़ने के लिए स्वतंत्र हैं। *''भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों।''* अपनी आशा परमेश्वर पर रखें, और जबकि प्रेम करने के लिए परमेश्वर है तो फिर पैसों से प्रेम क्यों करना! जब आप परमेश्वर की इच्छा रख सकते हैं, तो धन की इच्छा क्यों रखना! वह हमारे निमित्त भली वस्तुएँ देता है, इसलिए पूरी कृतज्ञता के साथ उस पिता से ग्रहण करें जो भले वरदानों को देता है। कृतज्ञता के साथ ग्रहण करें, उनसे संतोष करें, और सादा जीवन जीयें। यह उन बातों का पुनरावलोकन है जिनका हम पिछले कुछ सप्ताहों से अध्ययन कर रहे थे, यह जानते हुए कि परमेश्वर आपको मुक्त करता है। परमेश्वर में, हम अपने आसपास की संस्कृति से अलग तरीके से जीने के लिए स्वतंत्र हैं।

हमें और अधिक कहा–सुनी करने व चीज़ें जमा करने की होड़ में लगने की ज़रुरत नहीं है। हमारे पास परमेश्वर है! सादा जीवन जीयें, ताकि पूरी उदारता के साथ दूसरों को सको। इस बात के निमित्त परमेश्वर पर भरोसा रखें! लोगों, भाइयों और बहनों, दुनिया की सबसे अधिक समृद्धि में रहते हुए, दूसरों के साथ बाँटने की इच्छा व उदारता रखें। दूसरों को दे दें! परमेश्वर में संतोषी रहें, दूसरों को दें, और ऐसा करते हुए, अनन्तता में फले–फूलें। फिर वही बात। अपने उस भविष्य के लिए जमा करो, जब आप अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

यह रही सच्चाई। भाइयों और बहनों, चलिए एक दूसरे के साथ ईमानदार होते हैं। हम जब तक इस संस्कृति में हैं, तब तक हम भौतिकवाद के विरुद्ध लड़ाई लड़ते रहेंगे, और पिछले 3 सप्ताह से 1 तीमुथियुस 6 पर किए अध्ययन के आधार पर, मैं बस आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगा कि इस युद्ध में हथियार न

डालना। यह सतत् लड़ाई है। हर बार किसी विज्ञापन को देखने पर, यह युद्ध भड़कता है। हर बार किसी दुकान के सामने से गुज़रने पर, यह युद्ध भड़कता है। यह एक ऐसा युद्ध है जो हर उस बार भड़कता है जब आप दूसरों की संपत्ति को देखते हो। इस युद्ध को लड़ें। परमेश्वर में महान लाभ के लिए लड़ें। पहले से अधिक संपत्ति की ताक में रहने, और उसकी इच्छा व लालसा करने से मुक्ति पायें। इसके विरुद्ध लड़ने के लिए दूसरों को और अधिक उदारता से दें। इस युद्ध को कई तरीकों से लड़ा जा सकता है। यह एक दैनिक युद्ध है। मैं आपको प्रोत्साहित करते हुए कहना चाहूँगा कि आप इस युद्ध में लड़ते रहें और हथियार न डालें, क्योंकि इस शहर, और सभी जगहों पर आत्मायें दाँव पर लगी हैं। इसलिए, पौलुस कहता है कि ''भौतिक (धन–संपत्ति) के खज़ाने दे दों।''

अपनी थाती की रखवाली कर।

अच्छी लड़ाई लड़ने के विषय में पौलुस अंतिम आदेश देता है, और कहता है, *''अपनी थाती की रखवाली कर।''* 20वें पद में आप पौलुस को इसका सार देते हुए सुन सकते हैं। वह कहता है, ''हे, तीमुथियुस,'' कितने स्नेह व लाड़, और कितनी भावुकता से कहता है कि, *''हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर।''* यहीं, इसी पद में विश्वास की लड़ाई का सार है। <u>सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए इस लड़ाई को लड़ते हैं।</u> हमनें इस पूरे पत्र में, 1 तीमुथियुस 1 से लेकर 1 तीमुथियुस 6 तक में यह बात देखी है। यह बात पूरे पत्र में प्रवाहित हो रही है। पौलुस ने कहा है, ''कोई अन्य शिक्षाएँ न सिखाना। विश्वास पर टिके रहना। वचन को सिखाने में सक्षम अगुवें नियुक्त करें। स्वयं को विश्वास के वचनों में प्रशिक्षित करें। स्वयं को इस वचन के सार्वजनिक पठन के लिए समर्पित करें। अपनी शिक्षाओं पर बारीकी से ध्यान दें। इन बातों की शिक्षा दें। विश्वास पर जमें रह कर, विश्वास की एक अच्छी लड़ाई लड़ें।''

ये सारी बातें इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं? पौलुस कहता है, ''सुसमाचार की रखवाली करो, सुसमाचार में डगमगायें नहीं।'' सबसे पहले, यह <u>स्वयं हमारे लिए</u> यह बहुत महत्वपूर्ण है। उसने इस बात को बारंबार कहा है। लोग इस सत्य से भटक गए हैं 1 तीमुथियुस 1 में उसने कहा, *''उन्हें शैतान को सौंप दिया गया है।''* 1 तीमुथियुस 6 में, *''स्वयं को छलनी बना लिया है''* जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ, 21वें पद में, *''कितने.....विश्वास से भटक गए हैं।''* ओह, कलीसिया में मेरे भाइयों और बहनों, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ, मैं आपसे निवेदन करता हूँ, इसकी अवहेलना न करें। यूँ न सोचें, कि ''खैर, मैं तो सुसमाचार से कभी नहीं भटकनेवाला।'' आपको सुसमाचार से भटकाने के लिए आपको हर दिन परीक्षा में डाला जाएगा। ये सारी बातें, पौलुस तीमुथियुस..... इफिसुस की कलीसिया के पास्टर से कह रहा है, जिसके साथ उसने सालों काम किया था, और जो इन सभी बातों में विश्वासयोग्य रहा था.....और वह इसे ही बारंबार

चेतावनी दे रहा है। *''विश्वास को थामे रह।''* यह हम सबके लिए चेतानी की घंटी की तरह है, और इसमें मैं खुद भी शामिल हूँ। हम में ऐसा एक भी नहीं जो विश्वास से भटकानेवाली परीक्षा से मुक्त हो।

सुसमाचार को थामे रहने के लिए अंतिम श्वास तक लड़ो। चाहे वह श्वास कल आये, या आज से 80 साल बाद; लड़ते रहें। हार न मानें। तो, लड़ें। स्वयं के लिए सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य ठहरें, और दूसरो के लिए सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य ठहरें। अब, मैं चाहता हूँ कि आप दो विभिन्न स्तरों पर इसके विषय में सोचें। पहला, मैं चाहता हूँ कि आप इस पर विचार करें: उन लोगों के हित में सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए लड़ें, जो कलीसिया से बाहर हैं। तो, मैं यहाँ पर खोये हुओं और नाश होते लोगों के विषय में सोच रहा हूँ। वे लोग, जो परमेश्वर से अलग हैं, अनन्त नरक की ओर जानेवाले रास्ते पर अपने पापों में मर रहे हैं। यहाँ पर ऐसे लोग हैं जो इसी श्रेणी में आते हैं; जो मसीह के अनुयायी नहीं हैं; जिनका यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल–मिलाप नहीं हुआ है और उनके पापों की क्षमा नहीं मिली है। इस श्रेणी में वे लोग भी हैं जिनके साथ आप काम करते हैं। इसमें वे लोग हैं जो आपके पड़ोंस में हैं। इसमें वे लोग है जिनके साथ आप कॉलेज के प्रांगण में होते हैं, वे जिनके साथ आप कक्षा में पढ़ते है, जो उसी रास्तें पर चल रहे हैं जो अनन्त नरक में जाते हैं। इसे रेखांकित करें : विरोधी हमारे विरोध में लड़ाई कर रहा है, और उसका एक स्पष्ट लक्ष्य है आपको इस सुसमाचार के साथ चुप करना।

इसलिए, भय के विरुद्ध लड़ें। घबराहट के विरुद्ध लड़ें। लोगों की वाहवाही पाने और उनकी हामी की इच्छा के विरुद्ध लड़ें। प्रतिष्ठा के विरुद्ध लड़ें। घमंड के विरुद्ध लड़ें। सुसमाचार के प्रचार हेतु, इन सब बातों के विरुद्ध लड़ें। आप उस पल के लिए सोचें जब आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सुसमाचार बाँटने लगे थे जो उससे पूरी तरह अनजान था। आत्मिक युद्ध लड़े जाने के समय, परमेश्वर पवित्र आत्मा आपके भीतर होता है। *''जो तुम में है, वह उससे बड़ा है जो संसार में है।''* आत्मिक युद्ध के लिए शक्ति मौजूद है। इस युद्ध में आप अकेले नहीं हैं, लेकिन आप इस युद्ध से कतरा कर भाग नहीं सकते। दूसरों के निमित्त इस युद्ध को लड़ें। सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य ठहरने के लिए लड़ें। सुसमाचार को संचित न करें। उसे सर्वत्र फैलायें। इसके प्रचार हेतु लड़ें। एक आत्मकेंद्रित व आत्मसंतुष्ट मसीहत बनाने की परीक्षा में न पड़ें, जो सुसमाचार का संचय, सुसमाचार का उत्सव तो मनाते हैं लेकिन कभी उन लोगों के साथ नहीं बाँटतें जो नरक के रास्ते में पड़े हुए हैं। इसके विरुद्ध लड़ें।

इसलिए, उन लोगों के निमित्त लड़ें जो कलीसिया के बाहर हैं, और इसके बाद उन लोगों के निमित्त लड़ें जो कलीसिया के भीतर हैं। मैं बताता हूँ कि इससे मेंरा क्या तात्पर्य है। पश्चिमी यूरोप और पूरे संयुक्त राष्ट्र का भूदृश्य में कई सारी कलीसियाएँ हैं, जो कभी सुसमाचार का प्रचार करती थीं और वचन में मज़बूती

से टिकी थीं, लेकिन तब से, तरह–तरह के आज़ाद ख्याल धर्मविचारों में खो गई हैं, परमेश्वर के चरित्र पर सवाल उठा रही हैं, परमेश्वर की महिमा की भर्त्सना कर रही हैं, किसी तरह की स्थितियों में क्षीण हो रही हैं, और परमेश्वर के वचन की पूरी तरह से उपेक्षा कर रही है। आज इस धरती पर, कलीसिया की सभा के नाम से जगह–जगह लोग आदमी के विचारों को सुनने के लिए जमा होते हैं; परमेश्वर का वचन शायद ही कहीं मिलता है। एक समय था जब ये कलीसियाएँ परमेश्वर के वचन में मज़बूती से टिकी हुई थीं। इसलिए, हमें भी सचेत हो जाना चाहिए, भाइयों और बहनों, कि यदि हम भी वचन में मज़बूती से टिके न रहें, तो हमारे साथ भी यही हो सकता है।

इसलिए, उन लोगों के निमित्त, जो कि हमारे पीछे आनेवाले हैं, इस वचन को मज़बूती से थामे रहें। जैसा कि मैने पहले कहा था, मैं इस विश्वास से गिरने और सुसमाचार से दूर होने की परीक्षा से मुक्त नहीं हूँ। इसलिए, यदि मैं ऐसा कुछ करता हूँ, और आप अगर ऐसा कुछ होते देखें, तो मुझे पास्टर न रहने दें। कोई भी, जिसने वचन को मज़बूती से नहीं बाँधा है, उसे पास्टर न बने रहने दें। लेकिन यदि मैं इस वचन के प्रति विश्वासयोग्य भी बना रहूँ, यदि मैं वचन को मज़बूती से थामे रहूँ, तो भी सच्चाई यह है कि एक दिन ऐसा होगा, यदि यीशु तब तक न लौटा तो, कि जब मैं पास्टर न रहूँगा, और मेरे स्थान पर कोई और पास्टर होगा। सुनिश्चित करें, कि वह भाई वचन को मज़बूती से थामे रहे। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों के बच्चे भी इस वचन को मज़बूती से थामें, क्योंकि अपने दिनों में हमने इस वचन की अच्छी रखवाली की है। अपने बाद आनेवाले लोगों को बैटन पकड़ाने में हम विश्वासयोग्य ठहरे हैं। लेकिन अपने यदा–कदा काट–छाँट या सांस्कृतिक परंपरा के अनुसार नहीं, वरन् हम तो वचन को हर स्थिति में थामें रहते हैं चाहे फिर संस्कृति में इसका कितना ही बड़ा दाम क्यों न चुकाना पड़े।

इसलिए, कलीसिया में दूसरे लोगों के निमित्त भी, सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए लड़ें। सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए लड़ते समय, <u>हम ऐसे लड़ते हैं जैसे कि परमेश्वर के अनुग्रह से भरे हों।</u> आप शायद सोचेंगे, ''मेरे भीतर वह सामर्थ्य कहाँ कि मैं इस लड़ाई को लड़ूँ।'' इसी स्थान के लिए मुझे पौलुस के वे अंतिम शब्द अच्छे लगते हैं। ऐसा लगता है, जैसे सब कुछ कहने के बाद उसने तीमुथियुस की ओर देख कर कहता है, ''तुम पर अनुग्रह होता रहे।'' कुलुस्सियों 1:28–29 में पौलुस के शब्दों का प्रयोग करते हुए.... वह कहता है ''तीमुथियुस, तुम इस सब बातों पर कार्य करते हों, लेकिन तुम मसीह की शक्ति के साथ कार्य करते हो, और मसीह की सामर्थ्य तुम्हारे भीतर शक्तिशाली रीति से कार्य करती है।'' इस युद्धों को लड़ने के लिए आपको अनग्रुह की आवश्यकता होती है।

यही वह स्थान है जहाँ मैं 1 तीमुथियुस की इस यात्रा में छोड़ना चाहूँगा। मैं हम सबको प्रोत्साहन के दो सरल, लेकिन महत्वपूर्ण शब्दों के साथ छोड़ना चाहूँगा। पहला : यह जान लें : हम कभी इस युद्ध में अकेले नहीं होते। अब, स्पष्ट है कि हम इस बात को जानते हैं। 1 तीमुथियुस 6 में जिन बातों को हम सीख चुके हैं, उनके आधार पर, हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ रहता है। हम जानते हैं कि वह हमारे साथ है और हमारे निमित्त है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस बात को भी ज़रा अलग नज़रिये से देखें। पौलुस जब 21वें पद में कहता है, कि *''तुम पर अनुग्रह होता रहे,''* उसमें एक रोचक बात है, और वह है वह शब्द ''तुम,'' जो कि एकवचन में नहीं कहा गया है। यहाँ पर यह ''तुम'' शब्द बहुवचन शब्द है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। शायद आपकी बाइबल में एक टिप्पणी भी हो, जो आपको बाइबल के आधार पर देखने का संकेत करती हो। ''तुम'' के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द बहुवचन है, जो कि बहुत रोचक बात है।

पौलुस ने जब इस पत्र को लिखने की शुरुआत की थी, तब उसने कहा था, *''तीमुथियुस के नाम, जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है। पिता परमेश्वर, प्रभु मसीह यीशु से, तुझे अनुग्रह और दया, और शान्ति मिलती रहे।''* उसने यह पत्र तीमुथियुस को लिखा था, लेकिन वह इसके अंत में पहुँचता है, और वह कहता है, *''तुम पर अनुग्रह होता रहे।''* लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ''तुम'' अर्थात् ''तुम, तीमुथियुस तुम पर अनुग्रह होता रहे।'' इसमें ''तुम'' हे इफिसुस की कलीसिया, तीमुथियुस के साथ–साथ तुम पर भी अनुग्रह होता रहे।'' इसलिए, मैं जब भी हम सबसे कहता हूँ कि ''इस युद्ध में हम अकेले नहीं हैं,'' तब स्पष्ट है कि इससे मेरा मतलब यही होता है कि परमेश्वर हमारे साथ है, लेकिन साथ ही, विश्वास की लड़ाई लड़ते समय, केवल परमेश्वर ही आपके साथ नहीं हैं, वरन् परमेश्वर के लोग भी आपके साथ होते हैं। इस युद्ध में आप अकेले नहीं हैं।

हम में से एक भी ऐसा नहीं जो इस युद्ध में अकेला लगा है। संसार भर के लोग इस युद्ध में लगे हैं। आप युद्धों का सामना कर रहे हैं। मैं युद्धों का सामना कर रहा हूँ। सप्ताह भर हम लोग तरह–तरह के युद्धों का सामना करते हैं, और हमें एक दूसरे की ज़रुरत होती है। यहाँ मैं आपको एक बार फिर से प्रोत्साहन देना चाहता हूँ। यदि आप भाइयों और बहनों के किसी समूह में शामिल नहीं हैं जहाँ आप युद्ध के विरुद्ध एकजुट हो सकते हैं, तो आप ऐसे भाइयों और बहनों के किसी छोटे समूह में तुरंत शामिल हो जाइये, जहाँ आप उनके साथ युद्ध के लिए एकजुट हो सकें, जो आपको जानते हैं, जो आपके संघर्षों को जानते हैं, और आप उनके संघर्षों को जानते हैं, आप एक दूसरे को अपने जीवन के बारे में बताते हैं, और आप एक साथ युद्ध के लिए जाते हैं, और एक दूसरे के साथ सुसमाचार बाँटते हैं। सप्ताह भर कलीसिया की यही तस्वीर होनी चाहिए, कि भाइयों और बहनों के छोटे समूह में, हम एक दूसरे के साथ हैं, एक दूसरे को अपने जीवन के बारे में बताते हैं, और एकजुट होकर, इस युद्ध को साथ में लड़ रहे हैं। इसके बाद, रविवार को

हम एक मन होकर कलीसिया की सभा में आते हैं। भाइयों और बहनों, हम सिपाहियों की एक सेना है जो कह रही है, ''हम थक गए हैं, लेकिन हमारा परमेश्वर महान है। वह स्तुति और महिमा और आदर के योग्य है, और वह युद्ध जीत चुका है। इसलिए, हम उसमें आनन्दित करेंगे। जो बातें वह कहनेवाला है, उन्हें हम सुनेंगे। इसके बाद, इस सप्ताह के युद्ध में हम एक दूसरे के साथ, एक दूसरे की बगल में खड़े होकर युद्ध करेंगे।

1 तीमुथियुस 6 की जिस कलीसिया को आप देख रहे हैं, उसकी भी यही तस्वीर है; तुम, साथ मिलकर, विश्वास की इस लड़ाई को अपने मध्य पूरे अनुग्रह के साथ लड़ो। हम एक दूसरे के लिए, परमेश्वर के अनुग्रह का अनभुव पाने का एक माध्यम होते हैं। इस तरह का युद्ध, कलीसिया के गुमनाम लोगों या अलग–अलग कलीसियाओं में भटकते रहनेवाले लोगों के साथ नहीं लड़ा जाता। यह युद्ध तो आगे की पंक्ति में डटे रहनेवाले भाइयों और बहनों के साथ, एकजुट होकर लड़ा जाता है, और जो कहते हैं, ''हमें एक मिशन पूरा करना है, और एक साथ पीछा कर रहे हैं।'' इसलिए, इस युद्ध में हम अकेले नहीं हैं।

प्रोत्साहन का दूसरा शब्द है कि आत्मिक युद्ध के परिणामों को बदला नहीं जा सकता है, जैसे कि, यह युद्ध पहले से जीत लिया गया है। इसलिए, यह मेज़ इसी का प्रतिनिधित्व करती है। बस कुछ ही पलों में हम प्रभु भोज में शामिल होंगे। पाप के दंड को मसीह ने अपने ऊपर ले लिया है, और वह कब्र में से जिलाया जा चुका है। उसने पाप और मृत्यु को पराजित किया है, और उसने शैतान पर जय पाई है। शैतान एक हारा हुआ शत्रु है, और उसका नाश कर दिया जाएगा! इसका नाश होगा ही, बिल्कुल पक्का है। इसका मतलब यह हुआ कि हम विश्वास की एक अच्छी लड़ाई लड़ते समय, हम जीतने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। 1 यूहन्ना 4:4 का मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ। *''हे बालकों, तुम परमेश्वर के हो, और तुमने उन पर जय पाई है, क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है।''* यह युद्ध के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल देता है।

ज़रा इस पर कुछ इस तरह से विचार करें। अप्रैल 9, 1865 की सुबह, जनरल रॉबर्ट ई. ली. जनरल यूलीसिस एस. ग्रांट के साथ संयुक्त राष्ट्र के ग्रह युद्ध को समाप्त करने के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए मुलाकात करते हैं। युद्ध समाप्त हो चुका था। शांति की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन रोचक बात यह है, जहाँ हम बैठते हैं उसके दक्षिण में, मॉन्टोमेगरी से मोबाइल तक, युद्ध अभी तक लड़ा जा रहा था। हालांकि तकनीकी रुप से गृह युद्ध समाप्त हो चुका था, तब भी फोर्ट ब्लेकली की लड़ाई तब भी हुई। लड़ाई बिल्कुल असली थी। बंदूकें और उन पर लगे चाकू अब भी खतरनाक थे, और मौत भी उतनी ही

भयावह थी। युद्ध का निर्णय हो चुका था, लेकिन लड़ाई अब भी जारी थी। लेकिन जल्द ही, पूरी धरती पर संपूर्ण और अंतिम शांति फैल जाएगी।

हालाकि यह कोई संपूर्ण तस्वीर नहीं है, लेकिन मेरी बात को समझें। मेरे विचार से यह विश्वास की उस लड़ाई के अंश दिखाता है जिसमें हम स्वयं को पाते हैं। जय हो चुकी है! शैतान हराया जा चुका है! लेकिन दाँव पर अब भी उन लोगों के जीवन लगे हैं जो अब भी लड़ाई में हैं, और जिस प्रकार अलाबामा के निचले प्रदेश में शांति स्थापना होने को थी, वैसे ही यीशु की जय को भी इस संसार में पूरी तरह लागू किया जाना अभी बाकी है। वह दिन आ रहा है, वह दिन आने को है, जब यीशु आएगा, और आकर अपनी जय को अंतिम बार और सदा के लिए स्थापित करेगा। बुराई जड़ से खत्म हो जाएगी, लेकिन अभी तो हम विश्वास की लड़ाई में हैं। मैं चाहता हूँ कि आप इसे सुनें और इसे अपने भीतर समाने दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस युद्ध में आप गुज़र रहे हैं, यह उसके प्रति आपके दृष्टिकोण को अभी के अभी बदल देगा। हम इस युद्ध को जय के लिए नहीं लड़ते; हम इसे जय के साथ लड़ते हैं। यह बात सब कुछ बदल देती है। उसने पाप, मृत्यु और कब्र पर जय पाई है। उसने शैतान पर जय पाई है।

इसलिए, आप इस सप्ताह एक हारे हुए शत्रु से लड़ रहे हैं। इसलिए, उन बुराइयों से दूर भागो जो आपको परमेश्वर से दूर ले जाती हैं। भली बातों का पीछा करो, जो आपको परमेश्वर की ओर ले जाती हैं। जो जीवन उसने आपके लिए मोल लिया है, उसका अनुभव करें। उसने आपके नाम को पुकारा है। आपने अपने विश्वास का अंगीकार किया है। उसकी उपस्थिति की ज्योति में रहें। आपके प्रति उसकी विश्वासयोग्यता के दृष्टिकोण से। मिशन की अग्रिम पंक्ति पर अपना जीवन समर्पित करते समय, उसकी महानता के प्रति आदरपूर्ण भय में, इस सुसमाचार की रखवाली करें ताकि धरती के छोर तक उसकी महिमा जानी जाये। यह लड़ने के योग्य एक अच्छी लड़ाई है।